ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26   अंकः 86   बुलेटिन अवधिः 11–15 नवम्बर, 2017   दिनः शुक्रवार   दिनाँकः 10 नवम्बर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	11–11–2017	12–11–2017	13–11–2017	14–11–2017	15–11–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	28	28	28	27	27
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	11	12	12	12
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	साफ	आंशिक बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	45	45	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	010	008	004	006
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (3 से 9 नवम्बर, 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में हल्के बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 27.3 से 30.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 12.8 से 14.9 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 91 से 95 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 43 से 65 प्रतिशत एवं हवा 1.0 से 1.8 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- विलम्ब दशा में राई /सरसों की बुवाई नवम्बर माह में भी कर सकतें हैं। इस समय बुवाई हेतु वरदान एवं आशीर्वाद प्रजातियों का चयन करें। तथा कतार से कतार की दूरी 30 से0मी0 रखनी चाहिए। जमाव के 15 दिन बाद पौधों से पौधों की दूरी विरलीकरण द्वारा 15 से0 मी0 कर दें।

- ❖ राई एवं देर से बोई गई तोरिया एवं पीली सरसों में फूल आने से पूर्व हल्की सिंचाई करें। खेत में ओट आने पर बची हुई नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें।
- ❖ तोरिया, पीली सरसों एवं राई की फसल में माहू का प्रकोप होने पर 1 लीटर मिथाईल–ओ–डेमिटान 25ई0सी0 को 800 लीटर पानी में घोलकर /है0 की दर से छिड़काव करें। छिड़काव अपराहन 2 बजे के बाद करे ताकि मधुमक्खी को हानि कम से कम हों।
- ❖ सिंचित दशा में दलहनी फसलों – चना, मसूर तथा मटर की बुवाई इस माह कर सकते है। मसूर एवं मटर की सामान्य बुवाई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में करें।
- ❖ मसूर की उन्नतशील प्रजातियों पंत मसूर–8, पंत मसूर–7, पंत मसूर–6, डी0पी0एल0–7 आदि की बीज की दर 30–40 कि0ग्रा0/है0 रखें तथा बुवाई हेतु कतार से कतार की दूरी 25 से0मी0 रखें।
- ❖ मटर की बौनी प्रजातियों – अपर्णा, मावीया मटर–15, डी0डी0आर0–23, पंत मटर–13,14,25,74 तथा सामान्य मटर की पंत मटर–42 का चुनाव करें। बौनी मटर हेतु बीजदर 125 कि0ग्रा0/है0 तथा सामान्य मटर हेतु 80–100 कि0ग्रा0/है0 रखें। मटर की सामान्य किस्मों हेतु कतारों में 30 से0मी0 की दूरी तथा बौनी किस्मों हेतु कतारों के बीच की दूरी 20–25 से0मी0 रखें।
- ❖ बरसीम की बुवाई शुरू करें तथा बरसीम की उन्नत किस्म – यू0पी0बी0– 110, मस्कावी, पूसा जायन्ट, बरदान का चुनाव करें। बीज दर 25–30 कि0ग्रा0/है0 रखें।
- ❖ फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- ❖ गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- ❖ दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ बैगन एवं टमाटर में पत्तियो पर भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब का 2 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर में उपरी पत्तियॉ सिकुड़ने या चित्तकबरी होने की स्थिति में संक्रमित पौधो कों निकालकर नष्ट कर दे तथा रोगवाहक कीटो के नियंत्रण हेतु किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
- ❖ गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ फूल गोभी की अगेती एवं मध्यम अगेती फसल की सिंचाई करें खरपतवार निकालें एवं तैयार फूलो को तोड़कर बाजार भेंजे।
- ❖ बैगन की फसल में रस चूसने वाले कीड़ो से बचाव हेतु फसल पर फल तोड़ने के बाद मेलाथियान 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ बैंगन में फल तथा तना वेधक का प्रकोप होने पर, फल ना लगे होने की अवस्था में क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 3.5 एच.सी. का 200 मिली प्रति हैक्टेयर की दर से तथा फल लगे होने की अवस्था में साइपरमैथरीन 25 ई.सी. का 200 मिली/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500 मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ किसी भी कीटनाशी रसायन का एक बार से ज्यादा प्रयोग न करें।
- ❖ गोंद निकाले की दशा में कॉपर आक्सी क्लोराइड तथा बुझे हुए चूने का पौधां के मुख्य तने पर जहाँ से गोंद निकल रहा हों का लेप करें।
- ❖ पत्तियों पर अगर ऐन्थ्राक्नोज का प्रकोप हो तो कॉपर आक्सी क्लोराइड का 2 ग्राम/ली0 के हिसाब से छिड़काव करें।
- ❖ अगर बगीचों की सफाई व जुताई न हुई हो तो इसे शीघ्रातीशीघ्र पूर्ण करें।
- ❖ स्टैम कैंकर या काई कवक अगर तनों पर दिखें तो कॉपर आक्सीक्लोराइड या बीड़ों मिक्सर का छिड़काव करें।
- ❖ जाला कीट का प्रकोप होने की दशा में जाला साफ करने वाले यंत्र से सफाई करें तथा क्लीनालफॉस 2 मि0ली0/ली0 के हिसाब से छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ वर्षा के बाद नाना प्रकार के अन्तः परजीवी आहार नलिका में उत्पन्न हो जाते है। जो पशुओ का आहार स्वंय ग्रहण कर लेते है। अतः सर्वप्रथम निकटतम पशुओ का कृमिनाशक औषधि दें।
- ❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- ❖ खुरपका मुखपका के लक्षण– आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दषा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।

- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- नवजात पशु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पष्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिश हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा दें।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

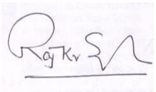

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर